श्रम विभाग ग्रादेश

दिनांक 24 जून, 1987

सं श्रो. वि. एफडी /गुड़गांव/ 78-87/ 24628 -- चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. (1) प्रवन्धक निदेशक, कन्फैंड, सैक्टर-22, वी चण्डीगढ़, (2)कन्फैंड ग्राफिस, निकट शर्मा रैस्टोरेन्ट, गुड़गांव, के श्रीमक श्री राजकुमार, सुपुत श्री ग्राशा राम, गांव ग्रयां नगर (कुरड़ी), तहसील व जिला हिसार तथा प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामल के सम्बन्ध में कोई श्रीदीगिक विवाद है;

भ्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, श्रव, श्रीचोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गर्डें शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के अधीन गठित आँचोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राजकुमार की सेवा समाप्ति/छंटनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो. वि. एफ डी./153-84/24636.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि भैं बाटा इण्डिया लि., एन ग्राई. टी., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम बिलास मार्फत श्री ग्रमर सिंह शर्मा, लेबर यूनियन ग्राफिस 1 के/14 (इन्टक), एन ग्राई.टी. फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं:

इस लिए, श्रव, ग्रांद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7क के ग्रधीन गठित ग्रांद्योगिक ग्रधिकरण, हरियाणा, फरोदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राम बिलास की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि. एफडी 133-87/24643.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि में. टूल्ज इण्डिया, 18/6, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री सुख राम व 16 श्रन्य श्रमिकगण (सूची नीवे दी गई है) मार्फत फरीदाबाद कामगार यूनियन, 2/7, गोपी कालोनी, पुराना फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

म्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं:

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिन्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इगके द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7क के श्रधीन गठित श्रीद्योगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद में सुसंगत या सम्बन्धित मामला है यायनिर्णय एवं एंचाट 3 मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री सुखराम व 16 ग्रन्य (सूची नीचे दी गई है) की सेवाओं का समापन त्यायोजित तथा ठीक है? प्रदि नहीं, तो वह किस राहत राहत के हकदार हैं?

 सर्वश्री
 श्रृमिकों
 की सूची

 1. सुख राम
 4. हर्षनाथ शर्मा

 2. सम्पत मोर्य
 5. जानकी मिश्रा

 3. दुखवन्ती कुमार
 6. बलराम यादव

	 		· ~
सर्वश्री		श्रमिकों की सूची	
7.	राम सुरेश प्रसाद	1 3.	विजेन्द्र सिंह
8.	मनबहादुर	14.	कन्हैया लाल
9.	चन्द्रबहादुर	15.	शिव बहादुर शर्मा
10.	तेज् प्रसाद	16.1	काली चरण
11.	रामचन्द्र	17.	रामस्वरूप
1 2.	सन्त ं		

सं श्रो विः एफडी /गुड़गांव/23-87/24650 — चृकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं इण्डो स्विस टाईम लि., डुण्डाहड़ा (गुड़गांव), के श्रमिक श्रीमती कुसुम लता, पत्नी श्री श्रोम प्रकाश, मकान नं 367, प्रताप नगर, गुड़गांव तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, ग्राँद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7क के ग्रधीन गठित ग्रीद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है त्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्रीमती कुसुम लता की सेवा समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं स्रो वि. एफडी /गुड़गांव / 73-87 / 24657.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. प्रवन्धक निर्देशक, वी रिवाड़ी सैन्ट्रल कोप बैंक लि., रिवाड़ी, के श्रमिक श्री दिरया सिंह सचिव, सुपुन्न श्री चिरन्जी लाल, गांव सिगरा, डा बिचीली, जिला महेन्द्रगढ़ तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रांचोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (६) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7क के अधीन गठित श्रौद्योगिक श्रीधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है श्रथवा में विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्याय निर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री दिरया सिंह सचिव की सेवा समाप्ति न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो. वि. एफ डी. |गुड़गांव | 107-87 | 24664.--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. इलीग्जर फारमेस्ट्रीकल लि., प्लाट नं. 8, धारूहेड़ा (गुड़गांव), के श्रमिक श्री हकीम दीन मार्फत श्री मुरली कुमार महा सचिव, 5 | 1, शिवाजी नगर, गुड़गांव तथा प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखिन मामले के सम्बन्ध में कोई स्रांचोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7क के ग्रिधीन गठित ग्रीद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मांस में देन हेतू निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री हकीम दीन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो वि. रोहतक/142-81/24671 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. हरियाणा डेरी डिवैल्पमैन्ट कोपरेटिव फैंडरेशन लि., मिल्क प्लांट, गोहाना रोड़, रोहतक, के श्रीमिक श्री ईश्वर सिंह, सुपुत्र श्री छत्तर सिंह मार्फत श्री एस एन. बत्स गली डाक-खानेवाली, रोहतक, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है, श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना स. 9641-1-श्रम-79/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतेक को विवादग्रस्त या उसमें सुसंगत या उसमें संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो के उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित है:—

द्या श्री ईश्वर सिंह की मेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं थो. वि. रोहतक/142-81/24678--चृकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. हरियाणा डेरी डिवेल्पमैन्ट को -प्रेटिव फैंडरेशन लि , मिल्क प्लांट, गोहाना रोड़, रोहतक, के श्रमिक श्री रामफल, सुपुत श्री गोपी राम मार्फत श्री एस.एन. बत्स, गली डाक-खाने वाली, रोहतक तथा एमके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है, श्री र चृकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्चना सं 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उदत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के दीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री रामफल की मेवाग्रों का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 16 जुलाई, 1987

सं ग्रो वि रोह 94-87/28446 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. रपैशल रिफेक्टरीज लि., कसार बहादुरगढ़ (रोहतक), के श्रमिक श्री लोक नाथ सिंह यादव मार्फत श्री ग्रार एस. यादव, प्रधान भारतीय मजदूर संघ, रेलंवे रोड़, काठ पण्डी, बहादुरगढ़ (रोहतक), तथा उसकं प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्राँद्योगिक विवाद है, ग्रौर चूंकि ह्युरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना स. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गटित श्रम स्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उद्य प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है :—

क्या श्री लोक नाथ सिंह यादव की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर हाजिर है कर नौकरी से लियन खोया है ? इम बिन्दु पर निर्गय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि. यमुना | 26-87 | 28466.—चूं कि हिर्याणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. स्कील कारपोरेशन ग्राफ हिर्याणा इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, यमुनानगर, के श्रीमिक श्री जमना प्रसाद सुपुत्र श्री जानकी प्रसाद मार्फत श्री बलबीर सिंह, 126, लंबर कालं.नी, यमुनानगर तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौं हो रि.क विवाद है, ग्राँ र चूंकि हरियाणा के राष्य-पाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लियं, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं -3(44)84-3, श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल 1984 हारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन पठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्गय एवं पंचाट तीन माम में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :-

क्या श्री जमना प्रसाद की सेवाग्रों का समापनं न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है?